जाल कुछ ऐसा पसारा जाए
बिन फंसे वह न दुबारा जाए
जिन्न दहशत का जो बाहर है उसे
उसकी बोतल में उतारा जाए।

❖❖❖

भाग्य का हमको कभी बल न मिला
हमको ही प्राप्ति का कौशल न मिला
सोना मिट्टी से मिला लोगों को
हमको पंकज से भी परिमल न मिला।

❖❖❖

पिछले अनुभव से खौफ खाती है
कल्पना मात्र ही डराती है
फिर महायुद्ध की हो आहट तो
नस्ल मानव की कांप जाती है

❖❖❖

रोशनी हर दिशा से लपकेगी
तेज इतनी कि आंख झपकेगी
जब अंगारे निचोड़े जाएंगे
बांधकर धार आग टपकेगी

❖❖❖

प्यार भरपूर यहां पाएं हम
सुख से दो रोटी कमा-खाएं हम
आ गया रास हमें तो यारो।
ये शहर छोड़ कहां जाएं हम।

❖❖❖

दिल, जिगर, सर की न बुझने पाये
वह सुखनवर की न बुझने पाये
याद रखना कि किसी हालत में
आग भीतर की न बुझने पाये।

❖❖❖

कोई निश्चित उपाय करता है
जिसका उसको प्रदाय करता है
देर हो सकती है कभी लेकिन
अंततः वक्त न्याय करता है।

❖❖❖

वह घटाता तो बढ़ा भी देता
वह गिराता तो चढ़ा भी देता
न्याय करता है समय, वह सबको
पाठ सुख-दुख के पढ़ा भी देता।

0❖❖❖

लोग वर को भी शाप करते हैं
वे हंसी हित विलाप करते हैं
कितना विपरीत आचरण उनका
पुण्य करने को पाप करते हैं।

❖❖❖

जो भी बिक जाए, उसकी किस्मत है
उच्च कीमत से उसकी इज्जत है
सब बिकाऊ यहां है मेले में
हर खिलौने की अपनी कीमत है

❖❖❖

आप तो व्यर्थ क्रोध करते हैं
बच निकलने का शोध करते हैं
जब उतरना नहीं है रण में तो
क्यों नपुंसक विरोध करते हैं।

❖❖❖

पाता क्या है वो बताता क्या है
करता क्या है वो जताता क्या है
आदमी करता दिखावा खुद को
होता क्या है वो दिखाता क्या है।

❖❖❖

सोचता कब? मनन नहीं करता
नव्य का उत्खनन नहीं करता
मूल वह सूझ संगणक में कहां
यंत्र मौलिक सृजन नहीं करता।

❖❖❖

सत्य ही खोट नहीं हो जाए
ब्रम्ह पर चोट नहीं हो जाए
इंसा रोबोट को रचते-रचते
खुद ही रोबोट नहीं हो जाए।

❖❖❖

प्रेम अनबन न कहीं हो जाए
मन ये उन्मन न कहीं हो जाए
शुभ है दुश्मन भी बने दोस्त मगर
दोस्त, दुश्मन न कहीं हो जाए। ❖